भद्रक-ओडिशा। ब्रह्माकुमारीज़ तथा जिला प्रशासन द्वारा आयोजित 'व्यसन-मुक्ति जागृति कार्यक्रम' में सम्बोधित करते हुए माननीय राज्यमंत्री प्रफुल्ल समल।

राँची-झारखण्ड। 'बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' में कैंडल लाइटिंग करते हुए प्रमोद जी,बोकारो थर्मल, डॉ. राजकुमार तिवारी,पी.जी. जियोग्राफी डिपार्ट.,राँची युनिवर्सिटी, ब्र.कु. निर्मला, ए.के. सिन्हा,पूर्व डी.जी. रेल तथा जी.पी. सिंह,पूर्व चीफ इंजीनियर,डी.वी.सी. मैथन।

सतपुली-उत्तराखण्ड। ब्रह्माकुमारीज़ के नए सेवा स्थान के उद्घाटन अवसर पर निकाली गई शिव संदेश शोभा यात्रा में भाग लेते हुए ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

मथुरा-उ.प्र.। आई.ओ.सी.एल. रिफाइनरी मथुरा के अंतर्गत सी.आई.एस.एफ. के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा 'दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम' के पश्चात् समूह चित्र में ई.डी.एल.डब्ल्यू. कोनगीर, डेप्युटी कमाण्डेंट ऑफिसर प्रदीप कुमार, विंग के प्रशिक्षक कमाण्डर शिव सिंह, ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

मोतिहारी-बिहार। व्यसन मुक्ति दिवस पर मोटरसाइकिल द्वारा निकाली गई 'जागरुकता रैली' का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. मीना। साथ हैं ब्र.कु. विभा, ब्र.कु. अशोक वर्मा, ब्र.कु. शिवरंजन तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। तम्बाकू निषेध दिवस पर आयोजित 'व्यसनमुक्ति जागृति रैली' का शुभारंभ करते हुए डॉ. अजय आहूजा तथा ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. राजपाल, ब्र.कु. अश्विनी तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

निमित्त बनकर करें कार्य, रहें निर्भय

-गतांक से आगे...

अर्जुन कहता है कि इस उग्र रूप को धारण करने वाले आप कौन हो? मैं जानना चाहता हूँ कि आप आदि पुरुष कौन हैं? अर्थात् जो विराट रूप दिखाया वो इतना दिव्य और उग्र स्वरूप था कि एक मुँह से सारी आत्मायें जा रही हैं, तो दूसरे मुख से कुछ आत्मायें देव स्वरूप में नीचे उतर रही हैं। ये उग्र रूप धारण करने वाले आप कौन हो?

भगवानुवाच:- मैं लोकों का नाश करने वाला महाकाल हूँ, इसलिए उठ खड़े हो जाओ और यश को प्राप्त करो। ये सब पहले से ही मेरे द्वारा मारे जा चुके हैं। तुम केवल निमित्त बन जाओ। परमात्मा को ये संसार परिवर्तन करने में देर नहीं लगती है। फिर भी वो कोई जादू की छड़ी घुमा करके काम करना नहीं चाहते हैं। इसलिए इंसान को निमित्त बनाते हैं। निमित्त भाव को जागृत करते हुए हमें अपना कर्त्तव्य करना है। इसलिए उसको आदेश देते हैं। उठो खड़े हो जाओ, अपना कर्त्तव्य करो और यश को प्राप्त करो। इस उग्र रूप को धारण करने का उद्देश्य, बतलाया कि परमात्मा कालों का भी काल अर्थात् महाकाल है और उन समस्त नकारात्मक शक्तियों का नाश करता है। दुनिया में इस वक्त नकारात्मक शक्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। ये एक-एक व्यक्ति में जो नकारात्मक भावनायें हैं, विकृतियां हैं ये असुरों से भी तेज़ हैं। भगवान इस संसार में नकारात्मक शक्तियों का नाश करने के लिए अवतरित होते हैं। अधर्मियों की शक्ति और सामर्थ्य कितना भी क्यों न हो, लोक हितकारी, महाकाल की शक्ति ने पहले ही उन्हें मार दिया है।

भगवान का लोक संहारकारी भाव, उनका लोक-कल्याणकारी भाव ही है। इसलिए वे ब्रह्मा, विष्णु, महेश की रचना रचते हैं। परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नये विश्व की स्थापना का कर्त्तव्य, विष्णु द्वारा नयी सतयुगी सृष्टि की पालना का कर्त्तव्य, लेकिन कलियुगी विकृत सृष्टि के महाविनाश का कार्य शंकर के द्वारा कराते हैं। यह लोक संहारकारी कार्य, दुनिया में भी देखते हैं कि अभी होलसेल में मौत का होना आरंभ हो गया है। सभी आत्माओं को ऊपर जाना है और समय अब बदल रहा है। अब सतयुग के आने का समय आ चुका है। इसलिए संसार के परिवर्तन की गति तीव्र हो गई है। लोक संहारकारी भाव का मतलब है, भगवान का लोक कल्याणकारी भाव। इसलिए भगवान इस बात को भी स्पष्ट कर देते हैं कि पुन: निर्माण के इस कार्य को करने के लिए अकेला काल ही समर्थ है अर्थात् संसार में, समय में इतनी शक्ति है परिवर्तन करने की।

-ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

इसलिए सर्वकालीन मनुष्य के प्रतिनिधि अर्जुन को ये उपदेश दिया जाता है कि वो निर्भय होकर अपने जीवन में कर्त्तव्य का पालन करे। भगवान हम सब अर्जुनों को ये उपदेश देते हैं कि निर्भय हो करके अपने जीवन में कर्त्तव्य का पालन करो। पुनरूत्थान के साथ सहयोग करके अर्जुन केवल सफलता का साथ ही दे रहा है। तो हमें भी सफलता का साथ देना है। इस तरह का अर्जुन बनने की प्रेरणा भगवान ने हमें दी है। फिर अर्जुन पूछता है कि वे सिद्ध संग आपको नमस्कार कैसे नहीं करेंगे क्योंकि आप तो सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा के भी आदि कर्त्ता हैं। इसलिए कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश के भी आदि कर्त्ता परमात्मा हैं। अनंत स्वरूप परमात्मा देवों का भी ईश्वर है। परमात्मा एक ही है। जो सभी देवी-देवताओं का भी ईश्वर है। सर्व शक्तिमान परमात्मा से समस्त देवताओं को तथा प्राकृतिक शक्तियों को सामर्थ्य प्राप्त होती है।

आप इस चराचर जगत के पिता पूजनीय और सर्वश्रेष्ठ गुरू हैं। जिसकी कोई प्रतिमा नहीं, ऐसे अप्रतिम प्रभाव वाले तीनों लोकों में आपके समान कोई नहीं है। इसलिए हे भगवन! जैसे पिता पुत्र को, मित्र अपने मित्र को, प्रिय अपने प्रिया के अपराधों को क्षमा करता है, वैसे ही आप भी मेरे अपराधों को क्षमा कीजिए। यहाँ पर अर्जुन को पूर्णत: अनुभव हो गया कि परमात्मा का असीम ऐश्वर्य क्या है और श्रीकृष्ण का ऐश्वर्य क्या है। देवी-देवताओं के अस्तित्व का भी ज्ञान हो गया। तब वो कहता है कि अब तक मैंने जो अज्ञानता के वश आपसे सवाल किए, जो भी आपके सामने अज्ञानता के कारण बातें कही तो आप मुझे क्षमा कर दें। - क्रमश:

ख़्यालों के आईने में...

हम चाहें तो अपने आत्मविश्वास और मेहनत के बल पर अपना भाग्य खुद लिख सकते हैं, और अगर हमको अपना भाग्य लिखना नहीं आता, तो परिस्थितियाँ हमारा भाग्य लिख देंगी।।

विश्वास में वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में प्रकाश लाया जा सकता है। विश्वास पत्थर को भगवान बना सकता है और अविश्वास भगवान के बनाए इंसान को भी पत्थर दिल बना सकता है।।

'मैं' कहाँ खो ... - पेज 2 का शेष

करने लगे। ऐसे में एक और महिला वहाँ से गुज़र रही थी, उसने भी यह देखा कि एक वृद्ध महिला और चार युवक कुछ ढूंढ़ रहे हैं, तो उसने पूछा कि आप लोग क्या ढूंढ़ रहे हैं। प्रत्युत्तर में वृद्ध महिला ने कहा कि मेरी वस्तु गुम हो गई है, उसे ही खोज रहे हैं। दूसरी महिला ने कहा, आपकी वस्तु कहाँ गुम हो गई? तो वृद्ध महिला ने कहा कि वो तो झोपड़ी में गिर गई है, वहाँ गुम हो गई है। तब दूसरी महिला ने कहा कि जब वहाँ वहाँ गुम हुई है तो वहाँ खोजना चाहिए ना, यहाँ क्यों ढूंढ़ रहे हैं। तब वृद्ध महिला ने कहा कि झोपड़ी में अंधेरा है, इसलिए दिखाई नहीं पड़ती, इसलिए हम उजाले में यहाँ ढूंढ़ रहे हैं। ठीक वैसे ही आज हर व्यक्ति इसी दौर से गुज़र रहा है। वो चाहता है तो अपने जीवन में शांति और खुशी, परंतु वो ढूंढ़ता कहीं और है। ऐसे में आज हम तो यही कहेंगे कि प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय इस विश्व के सामने एक विकल्प के रूप में उभर रहा है, जो ये ज्ञान देकर समस्याओं का समाधान दे रहा है।

रुड़की-उत्तराखण्ड। 'त्रिदिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिभागी बच्चों के साथ ब्र.कु. विमला दीदी तथा ब्र.कु. सोनिया।